# कुष्ठ रोग को जाने व समझे

कुष्ठ रोग से निपटने/को रोकने का सर्वोत्तम तरीका-
कुष्ठ रोग का जल्दी पता लगाएं और इसका बहुऔषध थ्रैपी (एमटीडी) द्वारा उपचार करें ।

**एम. डी. टी -**

- जीवाणुओं को मारती है।
- रोग के प्रसार को रोकती है।
- कुष्ठ रोग को ठीक करती है।
- विरूपता को रोकती है।

## आओ बात करें-

- इस तस्वीर को ध्यान से देखिए -
- इसमें दर्शाई गई विरूपता को नोट करें -
- इस विकृति का क्या कारण है?
- यह कुष्ठ रोग से ग्रस्त है।

क्या इस प्रकार की विरूपता कुष्ठ रोग से ग्रस्त सभी व्यक्तियों में पाई जाती है?

नहीं, यह साधारणतया तब होती है, यदि

- कुष्ठ रोग का **उपचार** नहीं किया गया हो
- उपचार **देर से** शुरू किया गया हो
- उपचार **अनियमित** हो
- किया गया उपचार **अपूर्ण हो**
- समय से **परामर्श** नहीं लिया गया हो ।

अथवा उस पर अमल नहीं किया गया हो ।

**क्या, कुष्ठ रोग साध्य है?**

हॉ, कुष्ठ रोग साध्य है । यदि इस रोग का प्रारंभिक अवस्था में पता लगा कर एम. टी.डी. द्वारा उपचार किया जाए।

हम कुष्ठ रोग से ग्रस्त व्यक्ति की किस तरह से सहायता कर सकते हैं और कुष्ठ रोग को फैलने से कैसे रोक सकते हैं?

- कुष्ठ रोग के बारे में **सही जानकारी** दे ।
- कुष्ठ रोग से ग्रस्त व्यक्ति की **पहचान** करके और उसे उपचार के लिए निकटतम स्वास्थ्य केन्द्र को **रेफर** करें ।
- कुष्ठ रोगी को **नियमित** और **पूरा उपचार** करने के लिए प्रोत्साहित करें ।

कुष्ठ रोग में विकृति और अशक्तता निम्न तरीकों से रोकी जा सकती है -

- शीघ्र निदान
- नियमित उपचार
- पूर्ण उपचार

## कुष्ठ रोग क्या होता है

- कुष्ठ रोग जीवाणुओं (रोगाणुओं) से होता है ।
- यह त्वचा, म्युकोसा (अंगों का अन्दरूनी भाग) और नसों को प्रभावित करता है ।
- यह किसी को भी, किसी भी उम्र के व्यक्ति, स्त्री-पुरूष दोनों को प्रभावित कर सकता है ।
- यदि समय पर इसका उपचार न किया जाए तो यह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैल सकता है ।
- कुष्ठ रोग से ग्रस्त व्यक्ति पूरी तरह से सामान्य जीवन व्यतीत कर सकता है ।
- कुष्ठ रोग से जुड़ी अशक्तता को रोग का प्रारंभिक अवस्था में निदान तथा एमडीटी द्वारा उपचार से रोका जा सकता है।

**कुष्ठ रोग को फैलने से रोकने का सर्वोत्तम तरीका -**
कुष्ठ रोग की प्रारंभिक अवस्था से पता लगाएं और एमडीटी द्वारा उसका उपचार करें।

## हम कुष्ठ रोग से ग्रस्त व्यक्तियों की सहायता किस प्रकार कर सकते हैं? ('आशा'के कर्त्तव्य/दायित्व)

**कुष्ठ के बारे में सही जानकारी फैलाएँ**

- कुष्ठ रोग का कलंक मिटाने के लिए लोगों में जागरूकता पैदा करें एवं स्वेच्छा से निदान तथा उपचार करवाने के लिए प्रोत्साहित करें ।
- कुष्ठ रोग से ग्रस्त व्यक्ति और रोग की जटिलताओं की पहचान करें ।
- उसे उपचार के लिए नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र में जाने के लिए प्रोत्साहित करें ।
- यह सुनिश्चित करें की रोगी नियमित उपचार करवा रहा है ।
- रोगी को उपचार पूरा करने/करवाने के लिए प्रोत्साहित करें ।
- विकृति को रोकने के लिए रोगी को स्वयं परिचर्या (डॉक्टर/स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा दिए गए परामर्श के अनुसार) का अभ्यास करने के लिए प्रोत्साहित करें ।

## कुष्ठ रोग से ग्रस्त व्यक्ति की पहचान कैसे करें

यदि किसी व्यक्ति में निम्नलिखित में से कोई एक या अधिक लक्षण/अथवा संकेत नजर आते हैं तो आप यह अनुमान लगा सकते हैं कि वह व्यक्ति कुष्ठ रोग से पीड़ित है और निदान की पुष्टि के लिए उसे आप निकटतम स्वास्थ्य केन्द्र के डॉक्टर के पास रेफर कर सकते हैं ।

कुष्ठ प्रभावित व्यक्ति में निम्नलिखित लक्षण हो सकते हैं-

**1. त्वचा पर चकत्ता पड़ना और त्वचा का सुन्न होना (ताप,स्पर्श और पीड़ा महसूस न करना)**

**चकत्ता**

- पीला, लाल और तांबई रंग वाला
- छोटा / बड़ा
- एक, कुछ अथवा अनेक
- सपाट अथवा उभरा हुआ
- कहीं पर भी हो सकता है

**परंतु**

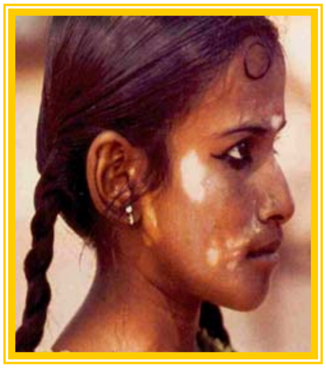

- सफेद, गहरे लाल अथवा काले रंग का नहीं होता
- पपड़ीदार नहीं होता
- जन्म के समय से मौजूद नहीं होता
- खुजली नहीं होती है
- सामान्यत: यह परेशान नहीं करता है ।
- अचानक प्रकट अथवा गायब नहीं होता है ।

## II. बाहरी सतह की नसों की संलिप्तता

**भंगुर मोटी नसे (रस्सी नुमा) -** विशेष रूप से कान के पीछे, बाहों और टांगों पर पायी जाती है।

**संवेदना ह्रास -** (स्पर्श, पीड़ा, ताप) विशेष रूप से उंगलियों के पोरों और पैर के तलवे में होती है ।

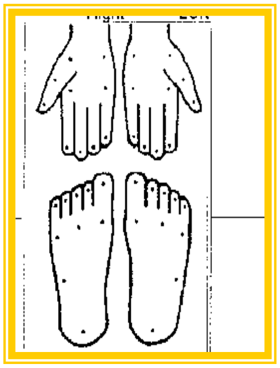

**कुछ क्रियाएं करने में कमजोरी / असमर्थता -** जैसे, अंगूठे के पोरों से उंगलियों के पोरों को स्पर्श करने में, कलाई पर हाथों को पीछे की ओर मोड़ने में, पैर को टखने पर ऊपर की ओर घुमाने अथवा आंखें पूरी तरह बंद करने में असमर्थता का कारण कुष्ठ रोग हो सकता है ।

## III. अंत- स्यंदन / त्वचा का मोटा होना -

लाल रंग की अथवा त्वचा के रंग की गांठों अथवा संवेदना ह्रास के बिना चिकनी और चमकदार त्वचा का अनावश्यक विस्तार होकर मोटा हो जाना ।

चेहरे अथवा कान की पालियों में सूजन अथवा अपवृद्धि होना ।

**IV. विकृति और अशक्तता -** कुष्ठ रोगियों में प्राय- निम्नलिखित विकृतियां और अशक्तता पाई जा सकती हैं।

हाथों अथवा पांवों का टेढ़ा होना

पांवों का उतरना / लटकना- पांव को टखने के जोड पर ऊपर की ओर मोड़ने में अक्षमता, पांव से चप्पल फिसल जाना तथा चलते हुए पाँव को अधिक ऊपर उठाना ।

कलाई का उतरना / लटकना- हाथ को कलाई के जोड़ पर पीछे की ओर मोड़ने में अक्षमता ।

आंखों को पूरी तरह बंद करने में अक्षमता ।

**V. घाव / दग्ध चिह्नों की पुनरावृत्ति -**

कुष्ठ के कारण तलवों और हथेलियों में बार-बार दर्द रहित् घाव/व्रण हो सकते हैं ।

**VI. कुष्ठ की प्रतिक्रियाएं -** कुष्ठ वाले व्यक्ति को लगभग किसी भी समय उपचार से पूर्व, निदान के समय, उपचार के दौरान और उपचार पूरा होने के बाद, रोग की प्रतिक्रिया हो सकती है । **लेपरा** प्रतिक्रियाएं दो तरह की होती हैं ।

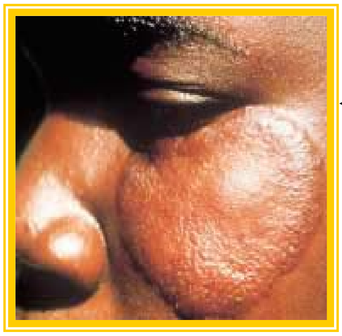

(क) मौजूदा दागों का लाल होना, सूजना, गर्म होना तथा छूने पर दर्द होना (पहली किस्म की प्रतिक्रिया)

(ख) बुखार के साथ चेहरे, बाजुओं और पैरों पर दर्द के साथ लाल गांठें उभरना, शरीर में दर्द और भूख कम लगना आदि (दूसरी किस्म की प्रतिक्रिया)

**निम्नलिखित रोगियों को तत्काल रेफर किए जाने की आवश्यकता होती है -**

- कुष्ठ की प्रतिक्रिया वाले रोगी
- अचानक कमजोरी/पेशियों में पक्षाघात तथा अंगों की यथा निर्धारित उपयोग करने की अक्षमता वाले रोगी
- जोड़ो को घुमाने/मोड़ने में कठिनाई समेत नसों में परिधीय दर्द वाले रोगी
- लाल आंखें
- हाथ-पांव की उंगलियों/पंजों में सूजन वाले रोगी

**आपको जब कुष्ठ का संदेह हो -**
**व्यक्ति को नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र मं चिकित्सक के पास निदान की पुष्टि और उपचार शुरू करने के लिए भेजें ।**

**उपचार की नियमितता तथा पूर्णता को मॉनीटर करना -**

बहुऔषध उपचार कुष्ठ के लिए पसंदीदा उपचार है ।
उपचार के लिए चार प्रकार की मानक प्रणालियां (रिजीमें) है ।

यह बहुत जरूरी है कि कुष्ठ प्रभावित व्यक्तियों को नियमित तौर पर बहुऔषध उपचार कोर्स पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए ।

चिकित्सक द्वारा किसी व्यक्ति की कुष्ठ से पीड़ित होने की नैदानिक पुष्टि हो जाने पर कुष्ठ की किस्म और उपचार अवधि का पता लगाया जाता है ।

| कुष्ठ की किस्म/ उपचार की अवधि | उपचार प्रणाली (रिजीम) | लक्षण |
|---|---|---|
| पी. बी. अल्पसंख्यक दंडाणु) लगातार 6-9 महीनों में छह खुराकें (पल्स) | पी बी वयस्क<br>पी बी (बाल) | कम गंभीर किस्म - त्वचा पर 1-5 धब्बे और अथवा/ एक तंत्रिका का प्रभावित होना |
| एम बी (बहुदंडाणु) लगातार 12-18 महीनों में12 खुराकें (पल्स) | एम बी वयस्क<br>एम बी (बाल) | अधिक गंभीर किस्म - त्वचा पर 6 अथवा अधिक धब्बे और/अथवा दो या अधिक तंत्रिकाओं का प्रभावित होना |

- जब बहुऔषध उपचार चल रहा हो तो कुष्ठ प्रभावित व्यक्ति के घर हर महीने जाएं ।
- सुनिश्चित करें कि कुष्ठ प्रभावित व्यक्ति नियमित तौर पर निर्धारित दिनांक से एक या दो दिन पहले दवा लेने जाता है और पिछले माह प्राप्त दवा का खाली पत्ता वापस करता है ।
- यदि रोगी हर महीने औषधि नहीं ले जा रहा है, तो कारण पता लगाएं, रोगी को नियमित उपचार के फायदे बताएं तथा चिकित्सक से उसकी समस्या का समाधान के बारे में विचार-विमर्श करें ।
- यह भी सुनिश्चित करें कि रोगी प्रतिदिन औषधि खा/ले रहा है ।
    - पता लगाएं कि औषधि कब ली गई थीं - मानो, सात दिन पहले
    - पिछले महीने के पत्ते में कितनी गोलियां बाकी थी - माना, दो गोलियां
    - पता लगाएं कि इस महीने के पैकेट में से कितनी गोलियां खाई गई हैं - मानो, 5 गोलियां

इससे यह पता चलता है कि रोगी प्रतिदिन औषधि ले रहा है क्योंकि-

2 गोलियां पिछले महीने +5 गोलियां इस महीने के पैकेट से = 7 दिन की दवा खाई गई
(औषधि सात दिन पहले ली गई थीं)

उपचार पूरा होने पर परिवार के बच्चों की कुष्ठ के लिए जांच की जानी चाहिए क्योंकि बच्चे अधिक असुरक्षित होते हैं ।

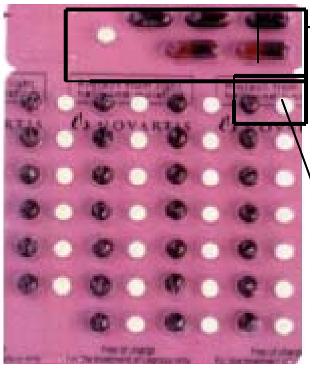

एम बी वयस्क)

महीने की पहली खुराक

दूसरे दिवस से एकान्तर (एक दिन छोड़कर) दिवस के लिए खुराकें

तीसरे दिवस से एकान्तर (एक दिन छोड़कर) दिवस के लिए खुराकें

दूसरे दिन से प्रतिदिन की खुराक

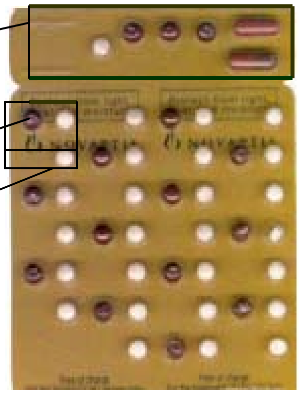

(एम बी बाल)

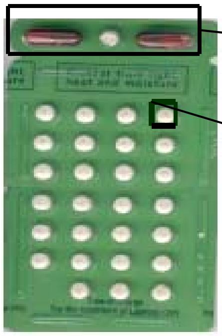

(पी. बी वयस्क)

महीने की पहली खुराक

दूसरे दिन से प्रतिदिन की खुराक

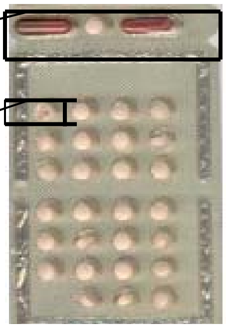

(पी.बी बाल)

| **बहु औषध उपचार** |
|---|
| ➢ सुरक्षित |
| ➢ गर्भकाल में भी सुरक्षित |
| ➢ प्रभावी |
| ➢ प्रभावी |
| ➢ लेने में आसान है |

**बहुऔषध औषधि को**

शुष्क, ठंडे और सुरक्षित स्थान पर तथा बच्चों की पहुंच से दूर रखें

## कुष्ठ के लिए जागरूकता उत्पन्न करें-

यह बहुत जरूरी है कि कुष्ठ के बारे में सही जानकारी फैलाई जाए, कुष्ठ प्रभावित व्यक्तियों को नियमित औषधि लेने और बहु औषध उपचार कोर्स पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए । आप कुष्ठ के कारण होने वाली जटिलताओं की रोकथाम में भी रोगी की मदद कर सकतीं हैं । आप प्रमुख व्यक्ति हैं, जो कुष्ठ से प्रभावित व्यक्ति और समुदाय जिसमें आप रहती हैं और कार्य करती हैं, में कुष्ठ के बारे में सही सूचना का प्रसार कर सकतीं हैं । आपको कुष्ठ प्रभावित व्यक्ति तथा पारिवार के सदस्यों और समुदाय के सदस्यों को बैठक में बुला कर निम्नलिखित सूचना देनी चाहिए -

| | |
|---|---|
| **रोग साध्य है**<br>➢ कुष्ठ, रोगाणुओं के कारण होने वाले अन्य संक्रामक रोगों की तरह ही है व पूर्णत- साध्य है ।<br>➢ बहुऔषध पसंदीदा उपचार हैं जो सभी स्वास्थ्य उपकेन्द्रों और प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर उपलब्ध हैं<br>➢ बहुऔषध उपचार निशुल्क उपलब्ध हैं ।<br>➢ अधूरे और अपर्याप्त उपचार से कुष्ठ रोग ठीक नहीं होता ।<br>➢ रोग दुबारा न होने तथा विकृति के निवारण के लिए निर्धारित बहुऔषध उपचार पूरा करना चाहिए । | **शीध्र निदान**<br>➢ सन्देहास्पद रोगियों को रोग की पुष्टि और उपचार शुरू करने के लिए नजदीकी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में ले जाना चाहिए । |
| **रोग से डरने की आवश्यकता नहीं है -**<br>➢ उपचार करवाते समय कुष्ठ रोगी को घर पर रखा जा सकता है और वह सामान्य जीवन व्यतीत कर सकता है अर्थात् स्कूल जाना, काम करना, खेलना, शादी करना व गर्भधारण करना<br>➢ यदि बहुऔषध उपचार सही तरीके से नहीं करवाया जाता तो रोगी अन्य व्यक्तियों, खासकर परिवार के बच्चों में रोग फैल सकता है ।<br>➢ बहुऔषध उपचार नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र में निशुल्क उपलब्ध होता है और बहुत सुरक्षित तथा प्रभावी है ।<br>➢ उपचारित रोगी गैर-संक्रामक होते हैं ।<br>➢ बहु औषध उपचार गर्भावस्था में भी सुरक्षा पूर्ण लिया जा सकता है | **रोगी के सहायक बने-**<br>➢ प्रभावित व्यक्ति को उसके परिवार और समुदाय/समाज से सहायता और प्रोत्साहन की जरूरत होती है ताकि वे नियमित उपचार करा सके और सामान्य जीवन व्यतीत कर सके । |

**कुष्ठ के डर को दूर भगाऐं**
**सही जानकारी फैलाऐं**

## अशक्तता की रोकथाम और चिकित्सीय पुन- स्थापन

यदि कुष्ठ का उपचार नहीं करवाया जाता, उपचार देर से शुरू करवाया जाता है, उपचार नियमित नहीं करवाया जाता है, उपचार पूरा नहीं करवाया जाता अथवा असंवेदनशील अंगों की सुरक्षा नहीं की जाती है तो कुष्ठ प्रभावित व्यक्ति में विरूपताएं अथवा अशक्तता पनप सकती है । कुष्ठ के कारण दैनिक कार्यकलापों को प्रभावित करने वाली सामान्य अशक्तता इस प्रकार है-

- **पलकों का पूरी तरह बन्द न होना -** इसके फलस्वरूप, कार्निया का अनावरण और व्रणोत्पत्ति होती है, जिससे आंखों की रोशनी कम अथवा पूरी तरह समाप्त हो सकती है ।
- **हाथों व पावों में संवेदना-ह्रास -** संवेदना ह्रास के साथ-साथ पसीना भी नहीं आता है जिससे त्वचा शुष्क बनती है जिससे त्वचा में दरारें पड़नें, व्रणोत्पत्ति और बार-बार घाव होने की प्रवृत्ति पनपती है ।
- **हाथों व पांवों में कमजोरी तथा विकृति -** मांसपेशियों में कमजोरी के कारण जोड़ों पर मांसपेशियों का संतुलन बिगड़ जाता है तथा यदि ठीक से देखभाल न की जाए तो अवकुंचन तथा स्थायी विकृति हो जाती है। मांसपेशियों में पक्षाघात के कारण व्यक्ति की कलाई और पांव उतर/लटक सकते हैं ।

स्वयं देखभाल की क्रियाओं के अभ्यास से रोग से संबंधित विकृतियां तथा अशक्तताएं रोकी जा सकती हैं तथा पुन- सर्जनात्मक शल्यक्रिया द्वारा प्रभावित अंग को कार्य करने लायक बनाया जा सकता है

पुन- सर्जनात्मक शल्यक्रिया की सुविधाएं अनेक केंद्रों में उपलब्ध हैं तथा स्वास्थ्य केंद्र के चिकित्सक कुष्ठ के कारण अशक्त व्यक्ति को शल्यक्रिया करवाने में सहायता कर सकते हैं ।

**विरूपता और अशक्तता के लिए -**

- कुष्ठ का शुरूआती चरणों में पता लगाएं
- बहुऔषध उपचार शुरू करें
- नियमित और पूरा उपचार सुनिश्चित करें

**पहले से विद्यमान विकृति को बिगड़ने/कुरूप होने से रोकना -**

- उपरोक्त सभी तथा
- उपचार कर रहे चिकित्सक द्वारा दी गई सलाह के अनुसार स्वयं देखभाल की क्रियाओं का अभ्यास सुनिश्चित करें ।

**पहले से विद्यमान विकृति को ठीक करना -**

- प्रभावित अंग को कार्य करने योग्य बनाने के लिए ज्यादातर विकृतियां ठीक की जा सकती हैं ।
- पुन- सर्जनात्मक शल्यक्रिया से ठीक की जा सकती है।
- नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र का चिकित्सक कुष्ठ से अशक्त व्यक्ति की सहायता कर सकता है ।